नवनीत

हिन्दी विशिष्ट

कक्षा 9

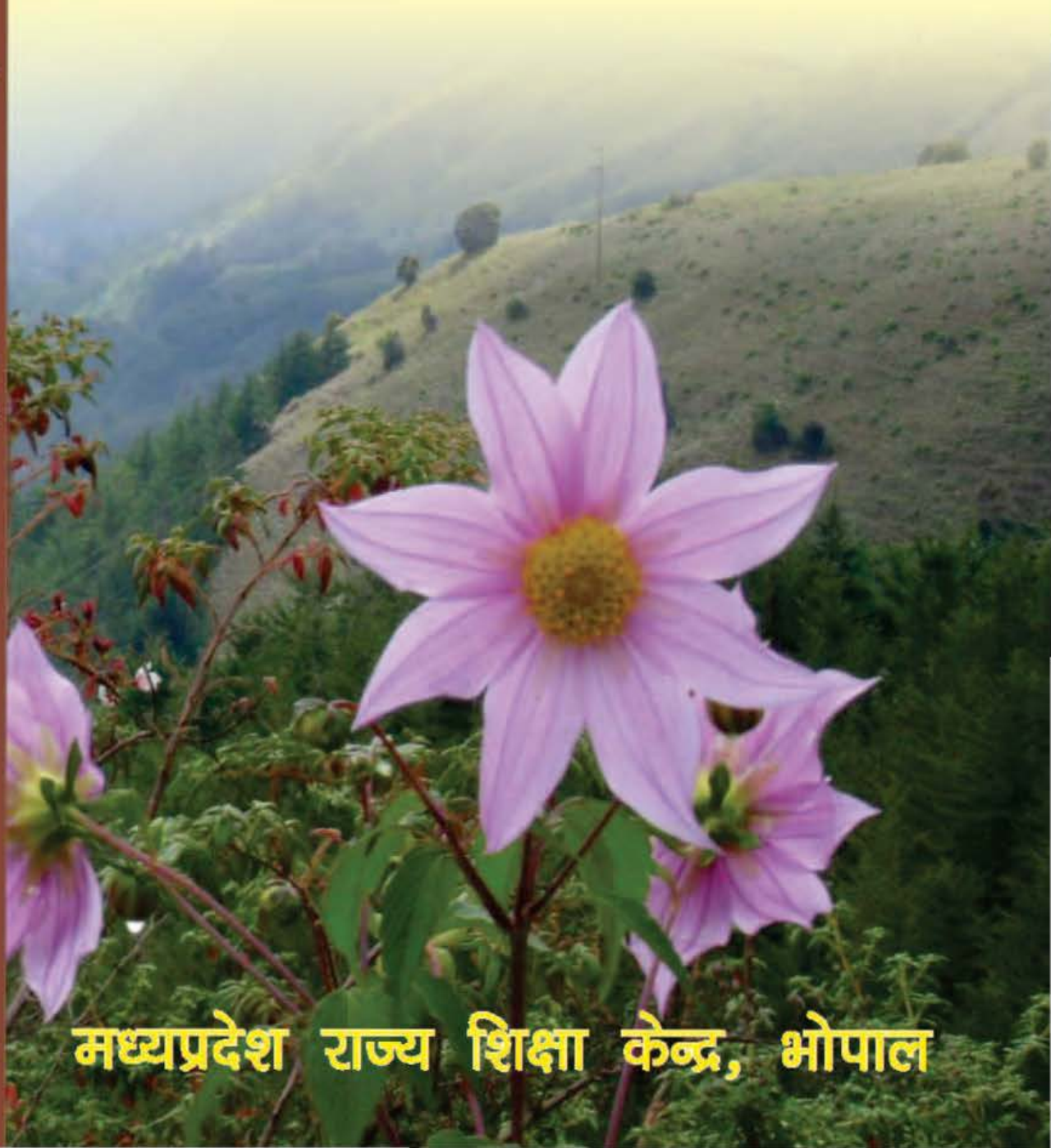

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

नवनीत

हिन्दी विशिष्ट

कक्षा 9

मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

इस पुस्तक के मुद्रण में उपयोग किए गए कागज का स्पेसिफिकेशन
अन्तः पृष्ठों के कागज– वाटर मार्क, मैपलिथो, मुद्रण कागज 70 जी.एस.एम., BIS गुणवत्ता IS 1848:2007 (चौथा पुनरीक्षण)
बाह्य पृष्ठों के कवर कागज– 230 जी.एस.एम., एम.जी. कोटेड
"पुस्तक के प्रत्येक पृष्ठ पर निगम का वाटर मार्क है"

वर्ष 2015

प्रकाशन वर्ष–2007

पुनर्मुद्रण वर्ष–2008, 2009, 2010, 2011, 2012, 2013, 2014, 2015

© राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

निदेशन

एम.के. सिंह, (आय.ए.एस.) आयुक्त, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

मार्गदर्शन

सन्तोष मिश्र, अपर मिशन संचालक, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

संयोजन

शकुन्तला श्रीवास्तव, समन्वयक, पाठ्यक्रम पाठ्यपुस्तक शिक्षण सामग्री निर्माण, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

विषय समन्वयक

डॉ. वन्दना मिश्र, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

लेखन

- **डॉ. मुरारीलाल उपाध्याय** (सेवानिवृत्त व्याख्याता), मुरैना
- **साहब सिंह तोमर** (सेवानिवृत्त प्राचार्य), मुरैना
- **डॉ. श्रद्धा सक्सेना**, सहायक प्राध्यापक, मेहगाँव, भिण्ड
- **डॉ. प्रतिभा गुर्जर**, प्राचार्य, शासकीय उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय, भोपाल
- **प्रदीप कुमार सोनी** 'शून्य' जन शिक्षक, बेगमगंज

मॉडरेशन

- **डॉ. प्रतिभा सिंह**, प्रध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, एम.जी.एम. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटारसी
- **छाया पाठक**, सहायक प्रध्यापक, डी.ए.वी. महाविद्यालय भोपाल

सम्पादन

- **डॉ. देवेन्द्र दीपक** निदेशक, मध्यप्रदेश साहित्य परिषद अकादमी, भोपाल
- **डॉ. प्रेम भारती** राज्य स्तरीय साधारण सभा एवं कार्यकारिणी, सदस्य, म.प्र., सर्व शिक्षा अभियान

मुख्य पृष्ठ : विकास मालवीय, मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल

लेजर टाईपसेटिंग : अनुषा ग्राफिक्स, भोपाल

प्री-प्रेस कार्य : मध्यप्रदेश माध्यम

आभार

राज्य शिक्षा केन्द्र उन सभी व्यक्तियों, संस्थाओं, प्रकाशकों का आभारी है जिन्होंने इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। पाठ्यपुस्तक हेतु रचनाकारों की रचनाएँ विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों आदि से संकलित की गई है, अतः केन्द्र उन सभी रचनाकारों, प्रकाशकों का हृदय से आभार व्यक्त करता है। यद्यपि कुछ रचनाकारों के छायाचित्र उपलब्ध न होने के कारण यह कार्य पूर्ण न हो सका इसके लिए आपका सहयोग अपेक्षित है अंततः माध्यमिक शिक्षा से जुड़े सभी शिक्षकों शिक्षाविदों एवं पालकों के प्रति आभार, जिन्होंने समय-समय पर पुस्तक को बेहतर बनाने के लिए अपने अमूल्य सुझाव दिए।

मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक स्थायी समिति द्वारा अनुमोदित

क्र.	नाम व पता	पद
1.	**डॉ. गोविन्द शर्मा** पूर्व अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा मध्यप्रदेश शासन, ग्वालियर	अध्यक्ष
2.	**डॉ. उमराव सिंह चौधरी** पूर्व कुलपति, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,इंदौर	सदस्य
3.	**प्रो. उदय जैन** पूर्व प्राचार्य, श्रीवैष्णव वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर	सदस्य
4.	**डॉ. सुभाष गुप्ता** डीन छात्र कल्याण, देवी अहिल्या विश्वविद्यालय,इंदौर	सदस्य
5.	**डॉ (श्रीमती) बिनय राजाराम** भारत भवन न्यासी (साहित्य) हिन्दी विभागाध्यक्ष, प्राध्यापक श्री सत्यसाई महिला महाविद्यालय, भोपाल	सदस्य
6.	**प्रो. सुरेश्वर शर्मा** पूर्व कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय, जबलपुर	सदस्य
7.	**डॉ. प्रकाश बरतुनिया** सहायक महाप्रबंधक, आई.डी.बी.आई., भोपाल	सदस्य
8.	**डॉ. मनमोहन उपाध्याय** शिक्षाविद् एवं उपाध्यक्ष, म.प्र. संस्कृत बोर्ड, भोपाल	सदस्य
9.	**श्री भगीरथ कुमरावत** शिक्षाविद्, भोपाल	सदस्य
10.	**आयुक्त, राज्य शिक्षा केन्द्र, भोपाल**	सदस्य सचिव
11.	**आयुक्त,** लोक शिक्षण संचालनालय, भोपाल	सदस्य
12.	**सचिव,** माध्यमिक शिक्षा मंडल, भोपाल	सदस्य
13.	**प्रबंध संचालक,** मध्यप्रदेश पाठ्यपुस्तक निगम, भोपाल	सदस्य
14.	**प्रतिनिधि,** राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली	सदस्य
15.	**प्रतिनिधि,** नवोदय विद्यालय	सदस्य
16.	**डॉ. प्रेम भारती,** शिक्षाविद् एवं सदस्य, राज्य स्तरीय साधारण सभा व कार्यकारिणी म.प्र. सर्व शिक्षा अभियान,	आमंत्रित सदस्य

आमुख

विचारों के आदान-प्रदान का सशक्त माध्यम भाषा है। भारतीय धर्म, दर्शन, कला, विज्ञान, इतिहास, अर्थशास्त्र, भूगोल, तकनीक, अन्तरिक्ष आदि की विषयवस्तु आत्मसात् करने के लिए भाषा का ज्ञान आवश्यक है। भाषा अध्ययन छात्रों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसलिए भाषा अध्ययन-अध्यापन का उद्देश्य समाज में अपनी विशिष्ट भूमिका दर्ज कराना भी है। इसके अध्ययन-अध्यापन के लिए सम्पूर्ण विषयों की जानकारी वांछनीय होती है। मानवीय प्रेम, साम्प्रदायिक सद्भाव, प्रकृति, पर्यावरण, संवेदना, राष्ट्रप्रेम, नैतिक मूल्य बोधपरक सामग्री से विषयवस्तु को रोचक व आकर्षक बनाने का प्रयास इस पुस्तक में किया गया है।

पुस्तक में साहित्य की विविध विधाओं यथा- कविता, कहानी, निबन्ध, एकांकी, संस्मरण, यात्रावृत्त, जीवनी, आत्मकथा, पत्र आदि से विषयवस्तु को संजोने का कार्य भी किया गया है।

इसमें भारतीय संस्कृति और इसकी विशिष्ट समन्वयवादी दृष्टिकोण को भी ध्यान में रखते हुए पाठ्य सामग्री का चयन किया गया है। साथ ही मध्यप्रदेश के संदर्भ साहित्यकारों को ध्यान में रखा गया है।

यह भी ध्यान में रखा गया है कि लोक परम्परा, साहित्य, कला, विज्ञान आदि के क्षेत्र में हम प्राचीन विरासत पर गर्व करते हुए आधुनिक चेतना के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास कर सकें। हिन्दी भारत की सामाजिक संस्कृति की संवाहिका है। इस माध्यम से कक्षा 9वीं का विद्यार्थी हिन्दी विशिष्ट के माध्यम से देश की संस्कृति के सार्वकालिक सार्वभौमिक बोध के साथ समन्वयवादी प्रकृति के प्रति अन्तर चेतना जाग्रत कर सकें।

छात्र राष्ट्रीय मुख्यधारा में अपनी व्यापक सहभागिता के लिए तैयार हो सकें, इसके लिए राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत सामग्री समावेशित करने का प्रयास किया गया है।

प्राथमिक से माध्यमिक और माध्यमिक से उच्चतर माध्यमिक सोपान पर कदम रखता विद्यार्थी बहुत से शारीरिक और मानसिक परिवर्तन से भी गुजरता है। इसी अवस्था में बहुत कुछ जान लेने का भाव उनमें होता है। इस बात को दृष्टिगत कर बाल/किशोर मन की जिज्ञासा शांत करने हेतु पाठ्यसामग्री का चयन किया गया है।

पाठ्यसामग्री सहज, सरल एवं बोधगम्य बनाने की दृष्टि से प्रत्येक पाठ के आरंभ में केन्द्रीय भाव के रूप में 'सारतत्व' तथा पाठ के अन्त में शब्दार्थ व टिप्पणी देने का प्रयास किया गया है।

रोचकता, विषय वैविध्य की दृष्टि से अध्यापक एवं विद्यार्थियों को स्पष्ट दृष्टि देने के उद्देश्य से प्रत्येक पाठ के अन्त में 'अभ्यास' के अन्तर्गत बोध प्रश्न दिए गए हैं, जिससे न केवल विद्यार्थी अपितु शिक्षकों को भी पाठ में निहित अपेक्षाएँ उभारने का अवसर मिलेगा। भाषा अध्ययन एवं काव्य सौन्दर्य द्वारा व्याकरण एवं काव्य के विविध पक्षों को उभारते हुए इसे सरल, सहज एवं बोधगम्य बनाने का प्रयास किया गया है।

पाठ के अन्त में योग्यता विस्तार के प्रश्न देकर किशोर मन की स्वच्छंद प्रतिभा विकसित करने का प्रयास किया गया है।

छात्र निर्धारित पाठ्यवस्तु में बंधकर न रह जाएँ, अपितु वे विशद् अध्ययन, मनन और चिंतन को प्रेरित हो सकें। उनमें भावनात्मक एवं बौद्धिक चरित्र निर्माण की स्वस्थ मनोवृत्ति तथा स्वयं ज्ञानार्जन की क्षमता विकसित हो, इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही सहायक वाचन को शामिल कर नवाचार के साथ जीवन मूल्यों पर आधारित सामग्री भी दी गई है।

पाठ्य पुस्तक के लेखन, संशोधन और संपादन से लेकर अंतिम प्रारूप देने तक मध्यप्रदेश स्थायी समिति के सदस्यों, अधिकारियों, विद्वानों, विषय-विशेषज्ञों का अपेक्षित सहयोग प्राप्त हुआ है। मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द्र उनके प्रति अपनी विनम्र कृतज्ञता ज्ञापित करता है।

आयुक्त
मध्यप्रदेश राज्य शिक्षा केन्द, भोपाल

पुस्तक के बारे में . . .

नई पाठ्यचर्या के पाठ्यक्रम पर आधारित यह पाठ्यपुस्तक हमें व्यापक बदलाव और बुनियादी विचारों पर अमल करने को जगह देती है। इसमें विषय की परम्परागत प्रवृत्ति से परे बच्चों को स्कूल के साथ बाह्य जीवन से जोड़ने का प्रयास किया गया है।

दूरसंचार/मीडिया आदि के वर्चस्व के कारण आज के इस युग में राजनैतिक, भौतिक, सामाजिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक, तकनीक और प्रौद्योगिकी आदि सभी क्षेत्रों में तेजी से बदलाव आ रहे हैं। इन बदलावों का प्रभाव हमारी भाषा और संस्कृति दोनों पर पड़ रहा है।

हमें अपनी साहित्यिक और सांस्कृतिक दोनों सोच को बनाए रखने के लिए भाषा की मानकता बचाए रखनी होगी। इस पुस्तक में बच्चों को इन क्षेत्रों से परिचित कराने के लिए उन्हीं की रुचि के अनुरूप लिखित और मौखिक दोनों रूपों को सशक्त और सृजनशील बनाए रखने का प्रयास हमने किया है। इन प्रयासों को सार्थक व प्रामाणिक बनाने के लिए पाठों की विषय वस्तु में साहित्य, संस्कृति, आस्था, त्याग, देशप्रेम और मानवता आदि मूल्यों को समाहित किया गया है। बचपन की देहरी लाँघते, किशोरवय में प्रवेश करते बच्चों के शारीरिक और मानसिक परिवर्तन को भी ध्यान में रखा गया है। उनका मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण परिष्कृत करते हुए भावों और विचारों के अनुरूप उपयुक्त विधाओं का चयन किया गया है।

बच्चों की रुचि परिष्कार हेतु अभ्यास प्रश्न के अन्तर्गत योग्यता विस्तार के प्रश्नों में सृजनशीलता को प्रोत्साहन देने की दृष्टि से विविध विषयों से संबंधित प्रश्न दिए गए हैं।

यह भी ध्यान रखा गया है कि 'भाषा' विषय विशेष में बंधकर नहीं रह सकती, अतः बच्चों की मौलिक सृजनशीलता बढ़ाने के लिए प्रश्नों के अन्तर्गत विविध विषयों से संबंधित कहानी, गीत, संवाद, पत्र, निबंध लेखन हेतु प्रेरक प्रश्नों का समावेश इस पुस्तक में किया गया है। पाठ्यवस्तु से शिक्षक सीधे जुड़ सकें इस प्रयास हेतु प्रश्नों में भी उनकी भूमिका को जोड़ा गया है बच्चों के ज्ञान, कौशल, स्वाभाविक सोच, अभिव्यक्ति और कल्पनाशीलता को विकसित करने हेतु सहायक वाचन के पाठ और गतिविधियों को मौलिक पठन-पाठन में सहायतार्थ रखा गया है। आशा है शिक्षक भी इस किताब से जुड़कर भाषा अध्ययन-अध्यापन को रुचिकर बनाने का प्रयास कर सकेंगे।

कक्षा 9, हिन्दी विशिष्ट की इस पुस्तक के नामकरण में भी अर्थपूर्ण नवीनता लाने का प्रयास किया गया है। इस पुस्तक का नाम 'नवनीत' रखा गया हैं। जिससे दही के मंथन के उपरान्त निकले मक्खन की भाँति विद्यार्थियों को हिन्दी साहित्य का 'नवनीत' प्राप्त हो सके।

विषय चयन से लेकर पाठ्यपुस्तक निर्माण तक विभिन्न विद्वानों/अधिकारियों/विषय विशेषज्ञों/लेखकों आदि का प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से सहयोग प्राप्त हुआ है उन सबके प्रति हम अपना विनम्र आभार व्यक्त करते हैं। पुस्तक निर्माण में जिन लेखकों, कवियों, रचनाओं को सम्मिलित किया गया है, उसके लिए हम संबंधित लेखकों पुस्तक प्रकाशकों का भी हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं।

पाठ्यक्रम

हिन्दी विशिष्ट

कक्षा-9

प्रश्न-पत्र **पूर्णांक-100**

क्र.	विषय सामग्री	अंक	काल खण्ड
1.	**पद्य खण्ड -**		
	पद्य साहित्य का विकास	4	
	कवि परिचय, व्याख्या, सौन्दर्य बोध तथा	23 } 27	40
	भाव एवं विषय वस्तु पर आधारित प्रश्न		
2.	**गद्य खण्ड -**		
	गद्य की विविध विधाएँ	4	
	लेखक परिचय, व्याख्या, गद्य पाठों पर आधारित	19 } 23	35
	विचार बोध एवं विषय बोध पर प्रश्न		
3.	**सहायक वाचन -**		
	विविध पाठों पर आधारित प्रश्न	10	15
	आँचलिक भाषा के पाठों पर आधारित प्रश्न		
4.	**भाषा बोध -**		
	उपसर्ग, प्रत्यय, तत्सम, तद्भव, देशज, आगत शब्द, रूढ़, यौगिक,	10	15
	योग रूढ़, वर्तनी परिचय एवं सुधार, पर्यायवाची, विलोम, अनेकार्थी शब्द		
	मुहावरे एवं लोकोक्तियों का अर्थ प्रयोग		
5.	**काव्य बोध -**		
	काव्य की परिभाषा एवं भेद - मुक्तक काव्य, प्रबंध काव्य	10	15
	रस - परिभाषा, अंग, भेद, उदाहरण		
	अलंकार - अनुप्रास, यमक, श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा		
	छंद - परिभाषा, मात्रिक, वर्णिक, दोहा, चौपाई		
6.	**अपठित बोध -**	05	10
7.	**पत्र लेखन -**	05	10
8.	**निबंध लेखन -**	10	20
	पुनरावृत्ति		20
	योग	100	180

विषय सूची

क्रमांक	पाठ का नाम	कवि	पृष्ठ क्र.
	कविता का स्वरूप एवं विकास		1
	पद्य साहित्य का इतिहास		10
1.	भक्ति धारा		
	● रैदास के पद	रैदास	13
	● पदावली	मीराबाई	15
2.	वात्सल्य भाव		
	● रसखान के सवैए	रसखान	18
	● मेरा नया बचपन	सुभद्रा कुमारी चौहान	19
3.	प्रेम और सौन्दर्य		
	● घनानन्द माधुरी	घनानन्द	22
	● देव सुधा	देवदत्त	24
4.	नीति – धारा		
	● रहीम के दोहे	रहीम	29
	● वृन्द के दोहे	वृन्द	30
5.	प्रकृति-चित्रण		
	● पंचवटी	मैथिलीशरण गुप्त	34
	● आः धरती कितना देती है।	सुमित्रानंदन पंत	35
6.	शौर्य और देशप्रेम		
	● हिन्दुस्तान हमारा है	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	42
	● स्वतंत्रता का दीपक	गोपाल सिंह नेपाली	44
7.	सामाजिक समरसता		
	● सुदामा चरित	नरोत्तमदास	48
	● शबरी प्रसंग	तुलसीदास	51
8.	कल्याण की राह		
	● विभीषण रावण संवाद	तुलसीदास	56
	● सूरज का पहिया	गिरिजा कुमार माथुर	57
9.	जीवन दर्शन		
	● काँटे कम से कम मत बोओ	रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'	60
	● सच है महज संघर्ष ही	जगदीश गुप्त	61
10.	विविधा		
	● हमारा देश	स. ही. वात्स्यायन अज्ञेय	65
	● घर की याद	भवानीप्रसाद मिश्र	66

क्रमाँक	पाठ का नाम	विधा	लेखक	पृष्ठ क्र.
गद्य साहित्य : स्वरूप एवं विधाएँ :				69
1.	व्याख्यान	भाषण	स्वामी विवेकानंद	75
2.	हिम्मत और जिन्दगी	निबन्ध	रामधारी सिंह दिनकर	80
3.	नदी बहती रहे	निबन्ध	भगवतीशरण सिंह	85
4.	नारियल	ललित निबन्ध	विद्यानिवास मिश्र	90
5.	उधार का अनंत आकाश	व्यंग्य	शरद जोशी	95
6.	एक कुत्ता और एक मैना	संस्मरण	हजारीप्रसाद द्विवेदी	99
7.	कर्म कौशल	निबन्ध	डॉ. रघुवीर प्रसाद गोस्वामी	105
एकांकी				
1.	दीपदान	एकांकी	डॉ. रामकुमार वर्मा	113
2.	बहू की विदा	एकांकी	विनोद रस्तोगी	129
कहानी				
1.	बड़े घर की बेटी	कहानी	प्रेमचंद	141
2.	ताई	कहानी	विश्वम्भरनाथ शर्मा 'कौशिक'	149
सहायक वाचन				
1.	नया वर्ष नया विहान	आलेख	अमृतलाल बेगड़	158
2.	पुस्तक	आत्मकथा	पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी	161
3.	हल्दीघाटी	कविता	श्यामनारायण पाण्डेय	164
4.	वैद्यराज जीवक	वैज्ञानिक निबन्ध	घनश्याम ओझा	167
5.	विश्व मन्दिर	सामाजिक निबन्ध	वियोगी हरि	171
6.	सिपाही का पत्र	कविता	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	174
7.	उड़ता चल कबूतर	यात्रा वृत्तांत	रामवृक्ष बेनीपुरी	178
8.	जीवन का झरना	कविता	आरसी प्रसाद सिंह	183
9.	प्रेरणा दीप	पौराणिक कथा संदर्भ	संकलित	185
10.	**जीवन दृष्टि**	लघु प्रसंग		
	• धर्म और विज्ञान सहकार		डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम	189
	• हम सब एक हैं		संकलित	190
	• न्यायाधीश की मातृभक्ति		संकलित	190

कविता का स्वरूप एवं विकास

कविता क्या है?

सुप्रसिद्ध समालोचक एवं चिन्तक आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने कविता को परिभाषित करते हुए लिखा है कि ''कविता वह साधन है जिसके द्वारा सृष्टि के साथ मनुष्य के रागात्मक संबंध की रक्षा और निर्वाह होता है।''

इस परिभाषा के अनुसार कविता की तीन विशेषताएँ परिलक्षित होती हैं:-

1. कविता मानव एकता की प्रतिष्ठा करने का एक साधन है और यही उसकी उपयोगिता है।
2. कविता में भावों एवं कल्पना की प्रधानता रहती है।
3. कविता में कवि की अनुभूति की अभिव्यक्ति रहती है।

अ. कविता का बाह्य स्वरूप - कविता के दो पक्ष हैं- अनुभूति और अभिव्यक्ति। अनुभूति पक्ष का संबंध कविता के आंतरिक स्वरूप से है, जबकि अभिव्यक्ति पक्ष का संबंध बाह्य रूप से है।

कविता के बाह्य रूप के निर्धारण में निम्नलिखित कारकों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है:-

1. लय 2. तुक 3. छन्द 4. शब्द योजना 5. काव्य भाषा 6. अलंकार 7. काव्य गुण

ब. कविता का आन्तरिक पक्ष - कविता का आन्तरिक पक्ष काव्य की आत्मा होती है। रसात्मकता, अनुभूति की तीव्रता, भाव और विचारों का समावेश तथा कल्पना की सृजनात्मकता से उत्पन्न सौन्दर्यबोध का सम्बन्ध कविता के आन्तरिक पक्ष से है। इसके अन्तर्गत भाव सौन्दर्य, विचार सौन्दर्य, नाद सौन्दर्य और अप्रस्तुत योजना का सौन्दर्य शामिल किया जाता है।

काव्य के भेद- काव्य के मुख्यत: दो भेद हैं -

दृश्य काव्य और **श्रव्य काव्य**

श्रव्य काव्य वह काव्य है जिसे हम सुनकर रसास्वादन करते हैं। दृश्य काव्य वह काव्य है जिसमें हम आँखों से देखते हैं व कानों से श्रवण करते हैं।

नाटक/दूरसंचार/इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आदि के माध्यम से प्रस्तुत होने वाले काव्य दृश्य-श्रव्य काव्य के अन्तर्गत लिए जा सकते हैं, क्योंकि जो काव्य दृश्य है वह तो दृश्य है ही किन्तु जो श्रव्य है वह भी दृश्य हो सकता है। आज किसी भी काव्य को दृश्य में निरूपित किया जा सकता है।

शैली की दृष्टि से काव्य के दो भेद होते हैं-

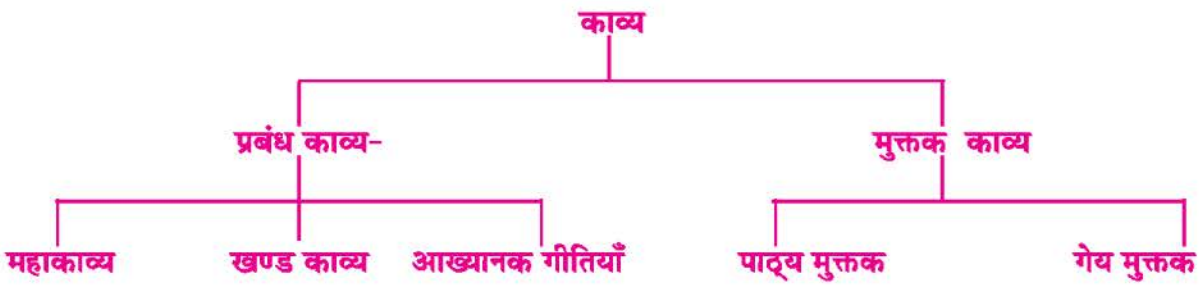

महाकाव्य - महाकाव्य में जीवन की विशद् व्याख्या होती है। इसकी कथा इतिहास प्रसिद्ध होती है। इसका नायक उदात्त चरित्र वाला धीर-वीर-गंभीर होता है। महाकाव्य में शृंगार, शांत और वीर में से कोई एक रस प्रधान रस होता है, शेष रस गौण होते हैं। महाकाव्य सर्गबद्ध हेाता है। इसमें कम से कम आठ सर्ग होते हैं।

महाकाव्य की कथा धाराप्रवाही-मार्मिक प्रसंगों पर आधारित होती है। मूल कथा के साथ-साथ अन्य सहायक कथांश भी इसमें आदि से अन्त तक आकर अपनी भूमिका का निर्वाह करते हैं। इनसे मूल कथा परिपुष्ट होती हैं।

हिन्दी के प्रमुख महाकाव्य- रामचरित मानस (गोस्वामी तुलसीदास), पद्मावत (मलिक मुहम्मद जायसी), साकेत (मैथिलीशरण गुप्त) कामायनी (जयशंकर प्रसाद) उर्वशी (रामधारी सिंह दिनकर)

खण्डकाव्य- खण्डकाव्य में जीवन के किसी एक भाग, एक घटना अथवा एक चरित्र का चित्रण किया जाता है। खण्डकाव्य अपने आप में एक पूर्ण रचना होती है। सम्पूर्ण रचना एक ही छंद में पूर्ण होती है। पंचवटी, जयद्रथ वध, नहुष, सुदामा-चरित, पथिक, हल्दी घाटी आदि प्रसिद्ध खण्डकाव्य हैं।

आख्यानक कृतियाँ- महाकाव्य और खण्ड काव्य से भिन्न पद्यबद्ध कहानी का नाम आख्यानक गीति है। इसमें वीरता, साहस, पराक्रम, प्रेम बलिदान और करुणा आदि से संबंधित प्रेरक घटना प्रसंगों को कथा के माध्यम से अभिव्यक्त किया जाता है। इसकी भाषा सरल, स्पष्ट और रोचक होती है। गीतात्मकता और नाटकीयता इसकी विशेषता है।

झाँसी की रानी, रंग में भंग, तुलसीदास, आदि आख्यानक कृतियों के उदहारण हैं।

मुक्तक काव्य- मुक्तक काव्य में एक अनुभूति, एक भाव और एक ही कल्पना का चित्रण होता है। मुक्तक काव्य की भाषा सरल व स्पष्ट होती है। वर्ण्य विषय अपने आप में पूर्ण होता है। इसका प्रत्येक छंद स्वतंत्र होता है।

उदाहरण के लिए-बिहारी, रहीम, वृन्द, सूर, मीरा के दोहे तथा पद आदि।

मुक्तक काव्य के दो प्रकार होते हैं-

पाठ्य मुक्तक और गेय मुक्तक

पाठ्य मुक्तक- पाठ्य मुक्तक में विषय की प्रधानता होती है, प्रसंगानुसार भावानुभूति व कल्पना का चित्रण होता है तथा किसी विचार या रीति का भी चित्रण होता है।

गेय मुक्तक- इसे गीति या प्रगीति काव्य भी कहते हैं। इसमें **1. भाव प्रवणता 2. सौन्दर्य बोध 3. अभिव्यक्ति की संक्षिप्तता 4. संगीतात्मकता 5. लयात्मकता** की प्रधानता होती है।

रस

'रस' शब्द आनन्द का पर्याय है। रसवादी आचार्यों ने काव्य में रस को ही मुख्य माना है। उन्होंने रस को 'काव्य की आत्मा' कहा है। जैसे- आत्मा के बिना शरीर का कोई मूल्य नहीं, उसी प्रकार रस के बिना काव्य भी निर्जीव माना जाता है। काव्य की परिभाषा करते हुए भी रस को केन्द्रीयता प्रदान की गई है। **'रसात्मकं वाक्यं काव्यम्'** अर्थात् रसयुक्त वाक्य ही काव्य है। यदि काव्य की तुलना मनुष्य से की जाए तो, शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर, अलंकारों को आभूषण, छन्दों को उसका बाह्य परिधान तथा रस को आत्मा कह सकते हैं।

काव्य में रस का अर्थ आनन्द स्वीकार किया गया है। साहित्य शास्त्र में 'रस' का अर्थ अलौकिक या लोकोत्तर आनन्द होता है।

''काव्य के पढ़ने, सुनने अथवा उसका अभिनय देखने में पाठक, श्रोता या दर्शक को जो आनन्द मिलता है, वही काव्य में रस कहलाता है।''

रस के अंग

'रस' को आस्वाद योग्य बनाने में सहायक अंगों को रस अवयव कहा गया है।

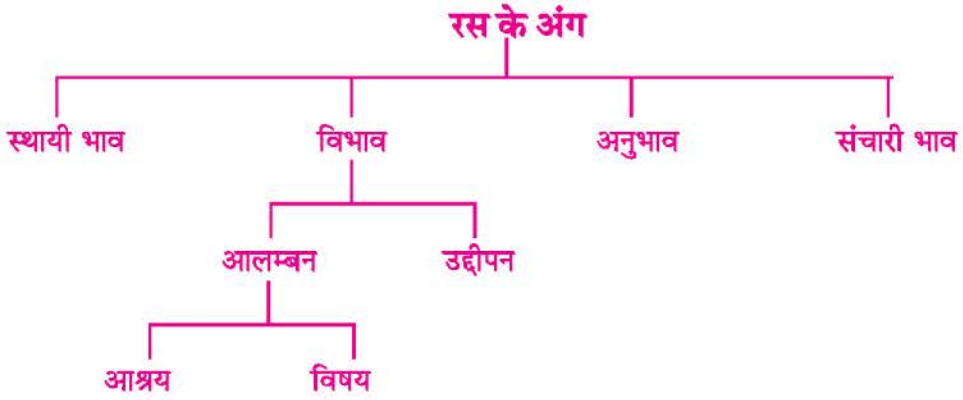

रस एवं उनके स्थायी भाव

	रस	स्थायी भाव
1.	शृंगार	रति
2.	हास्य	हास
3.	करुण	शोक
4.	रौद्र	क्रोध
5.	वीभत्स	जुगुप्सा
6.	भयानक	भय
7.	अद्‌भुत	विस्मय
8.	वीर	उत्साह
9.	शान्त	निर्वेद
10	वात्सल्य	वत्सल

आचार्य भरत ने नाटक में आठ रस माने है। परवर्ती आचार्यों ने शान्त रस को अतिरिक्त स्वीकृति देकर कुल नौ रसों की पहचान निश्चित की हैं। काव्य में महाकवि सूरदास ने वात्सल्य से सम्बन्धित मधुर पद लिखे, तो एक अन्य रस **वात्सल्य रस** की स्थापना हुई। भक्ति को रस रूप में मान लिये जाने का आग्रह है।

विभिन्न रस एवं उनके उदाहरण

1. **शृंगार रस (क) संयोग-** इसमें नायक-नायिका के संयोग की स्थिति का वर्णन रहता है।

उदाहरण –

''बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय।
सौंह करें, भौंहनि हँसें, देन कहे नट जाय॥''

(ख) वियोग-नायक-नायिका के बिछुड़ने या दूर देश में रहने की स्थिति का वर्णन, वियोग शृंगार की व्यंजना

करता है।

उदाहरण – **''आँखों में प्रियमूर्ति थी, भूले थे सब भोग।**
हुआ योग से भी अधिक, उसका विषम वियोग॥''

2. **हास्य रस–** जहाँ किसी व्यक्ति की विकृत (अटपटी) वाणी, विकृत वेश एवं आकृति, चेष्टा आदि का वर्णन हो जिसे सुनकर या देखकर हँसी उत्पन्न होती है, वहाँ हास्य रस होता है।

''जब धूम धाम से जाती है बारात किसी की सज-धज कर।
मन करता धक्का दे दूल्हे को, जा बैठूँ घोड़े पर।
सपने में ही मुझको अपनी, शादी होती दिखती है।
वरमाला ले दुल्हन बढ़ती, बस नींद तभी खुल जाती है।''

3. **करुण रस–** प्रिय वस्तु के नाश और अनिष्ट की प्राप्ति से चित्त में जो विकलता आती है, वहाँ करुण रस होता है।

उदाहरण –

''अभी तो मुकुट बँधा था माथ
हुए कल ही हल्दी के हाथ।
खुले भी न थे लाज के बोल
खिले भी न चुम्बन-शून्य कपोल।
हाय! रुक गया यही संसार,
बना सिन्दूर अंगार॥''

4. **रौद्र रस–** जहाँ क्रोध नामक स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव तथा संचारी भाव से पुष्ट होता हुआ रस दशा को प्राप्त होता है, वहाँ रौद्र रस पाया जाता है।

उदाहरण –

''सुनत लखन के वचन कठोरा ।
परशु सुधारि धरेउ कर घोरा ।
अब जनि देउ दोष मोहि लोगू,
कटु वादी बालक वध जोगू ॥''

5. **वीर रस–** वीर रस में उत्साह स्थायी भाव होता है। युद्ध में विपक्षी को देखकर, ओजस्वी वीर घोषणाएँ या वीर गीत सुनकर तथा उत्साह वर्धक कार्यकलापों को देखने से यह रस जाग्रत होता है।

उदाहरण –

''वह खून कहो किस मतलब का
जिसमें उबाल का नाम नहीं।
वह खून कहो किस मतलब का
आ सके देश के काम नही।''

6. **भयानक रस–** भय इसका स्थायी भाव है। भयंकर प्राकृतिक दृश्यों को देखकर अथवा प्राणों के विनाशक बलवान् शत्रु को देखकर उसका वर्णन सुनकर भय उत्पन्न होता है।

उदाहरण –

"हाहाकार हुआ क्रन्दनमय, कठिन वज्र होते थे चूर।
हुए दिगन्त बधिर भीषण रव बार-बार होता था क्रूर"॥

7. **वीभत्स रस** – वीभत्स रस का स्थायी भाव जुगुप्सा है।

जहाँ दुर्गन्धयुक्त वस्तुओं, चर्बी, रुधिर, आदि का ऐसा वर्णन हो, जिससे मन में घृणा उत्पन्न हो वहाँ वीभत्स रस होता है

उदाहरण –

"कहुँ धूम उठत बरति कहुँ चिता,
कहुँ होत रोर, कहुँ अर्थी धरि अहै।
कहुँ हाड़ परो, कहुँ जरो, अधजरो माँस,
कहुँ गीध काग माँस नोचत पीर अहै।"

8. **अद्‌भुत रस**– जहाँ अलौकिक व आश्चर्यजनक वस्तुओं या घटनाओं को देखकर जो विस्मय (आश्चर्य)भाव हृदय में उत्पन्न होता है, वहाँ अद्‌भुत रस पाया जाता है।

उदाहरण –

"बिनु पद चलै सुनै बिनु काना, कर बिनु कर्म करै विधि नाना।
आनन रहित सकल रस भोगी, बिनु वाणी वक्ता बड़ जोगी॥"

9. **शान्त रस**– शान्त रस का विषय वैराग्य एवं स्थायी भाव निर्वेद है। संसार की अनिश्चितता एवं दुःख की अधिकता को देखकर हृदय में विरक्ति उत्पन्न होती है। इस प्रकार के वर्णनों में शान्त रस होता है। साहित्यदर्पणकार ने शान्त रस का स्थायी भाव 'शम' बतलाया है।

उदाहरण –

"चलती चाकी देखकर, दिया कबीरा रोय।
दुइ पाटन के बीच में, साबुत बचा न कोय॥"

10. **वात्सल्य रस**– इन नौ रसों के अलावा मनीषियों ने दसवें रस वात्सल्य की कल्पना की है जहाँ शिशु के प्रति प्रेम, स्नेह, दुलार आदि का प्रमुखता से वर्णन किया जाता है वहाँ वात्सल्य रस होता है, इसका स्थायी भाव वत्सल है। सूरदास ने वात्सल्य रस का सुन्दर निरूपण किया है।

उदाहरण –

"धूरि भरे अति सोभित स्यामजू , तैसि बनी सिर सुन्दर चोटी।।"

अलंकार

अलंकार का सामान्य अर्थ है आभूषण या गहना। जिस प्रकार आभूषण से शरीर की शोभा बढ़ती है, उसी प्रकार अलंकार से काव्य की शोभा बढ़ती है। अलंकार शब्द का अर्थ है– वह वस्तु जो सुन्दर बनाए या सुन्दर बनाने का साधन हो। साधारण बोलचाल में आभूषण को अलंकार कहते हैं। जिस प्रकार आभूषण धारण करने से नारी के

शरीर की शोभा बढ़ती है वैसे ही अलंकार के प्रयोग से कविता की शोभा बढ़ती है। आचार्यों ने अलंकार के लक्षण इस प्रकार बताए हैं-

- कथन के असाधारण या चमत्कार पूर्ण प्रकारों को अलंकार कहते हैं।
- शब्द और अर्थ का वैचित्र्य अलंकार है।
- काव्य की शोभा बढ़ाने वाले धर्मों को अलंकार कहते हैं।
- काव्य की शोभा की वृद्धि करने वाले शब्दार्थ के अस्थिर धर्मों को अलंकार कहते हैं।

वास्तव में अलंकार काव्य में शोभा उत्पन्न न करके वर्तमान शोभा को ही बढ़ाते हैं। इसीलिए आचार्य विश्वनाथ के शब्दों में "अलंकार शब्द अर्थ-स्वरूप काव्य के अस्थिर धर्म हैं और ये भावों और रसों का उत्कर्ष करते हुए वैसे ही काव्य की शोभा बढ़ाते हैं जैसे हार आदि आभूषण नारी की सुन्दरता में चार-चाँद लगा देते हैं।"

अलंकार के भेद

शब्दालंकार उभयालंकार अर्थालंकार

शब्दालंकार- काव्य में जहाँ शब्दविशेष के प्रयोग से सौन्दर्य में वृद्धि होती है, वहाँ शब्दालंकार होता है। प्रमुख शब्दालंकार निम्नलिखितहै :-

1. **अनुप्रास:-** जिस काव्य रचना में एक ही वर्ण की दो या दो से अधिक बार आवृत्ति होती है। वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।

   यथा - "तरनि तनुजा तट तमाल,
   तरुवर बहु छाए।"

   यहाँ 'त' वर्ण की आवृत्ति की गई है।

2. **यमक अलंकार-** काव्य में जहाँ एक ही शब्द बार-बार आए किन्तु उसका अर्थ अलग-अलग हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।

   यथा - "माला फेरत जुग गया, गया न मनका फेर।
   करका मनका डारिके मन का मनका फेरि॥"

   यहाँ मनका शब्द के दो अर्थ है- पहले मनका का अर्थ हृदय है और दूसरे मनका का अर्थ मोती है।

3. **श्लेष अलंकार-**

   श्लेष का अर्थ है चिपकना। श्लेष अलंकार में एक ही शब्द के दो या दो से अधिक अर्थ होते हैं।

   "चिरजीवी जोरी जुरै क्यों न सनेह गंभीर।
   को घटि ये वृषभानुजा वे हलधर के वीर॥"

वृषभानु की पुत्री अर्थात् राधिका

वृषभ की अनुजा अर्थात् गाय

हलधर अर्थात कृष्ण के भाई बलराम

हल को धारण करने वाला अर्थात् बैल

अर्थालंकार-

''काव्य में जहाँ शब्दों के अर्थ से चमत्कार उत्पन्न होता है वहाँ अर्थालंकार होता है।'' अर्थालंकार के भेद अनेक हैं लेकिन, यहाँ हम पाठ्यक्रम में समाहित अलंकारों की ही चर्चा करेंगे।

1. **उपमा** - जहाँ एक वस्तु अथवा प्राणी की तुलना अत्यंत सादृश्य के कारण प्रसिद्ध वस्तु या प्राणी से की जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है।

उदाहरण -

''सिंधु-सा विस्तृत और अथाह,
एक निर्वासित का उत्साह''

उपमा के चार अंग होते हैं- उपमेय, उपमान, साधारणधर्म और वाचक शब्द

(अ) उपमेय- जिस व्यक्ति या वस्तु की समानता की जाती है।

(ब) उपमान- जिस व्यक्ति या वस्तु से समानता की जाती है।

(स) साधारण धर्म- वह गुण/धर्म जिसकी तुलना की जाती है।

(द) वाचक शब्द- वह शब्द जो रूप, रंग, गुण और धर्म की समानता दर्शाता है।

यथा - सा, सी, सम, समान आदि।

रूपक अलंकार - काव्य में जहाँ उपमेय में उपमान का आरोप होता है वहाँ रूपक अलंकार होता है।

''चरण सरोज पखारन लागा।''

इसमे वाचक शब्द का लोप होता है।

उत्प्रेक्षा अलंकार - काव्य में जहाँ उपमेय में उपमान की संभावना व्यक्त की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

उदाहरण - **''जनु, अशोक अंगार दीन्ह मुद्रिका डारि तब''**

''मानो, झूम रहे हैं तरू भी मंद पवन के झोंकों से।''

जनु, जानो, मनु, मानो, मानहुँ आदि वाचक शब्द उत्प्रेक्षा के उदाहरण हैं।

उभयालंकार - जहाँ काव्य में ऐसा प्रयोग किया जाए जिससे शब्द और अर्थ दोनो में चमत्कार हो वहाँ उभयालंकार होता है। जैसे संकर और संसृष्टि।

छन्द

''कविता के शाब्दिक अनुशासन का नाम छंद है।''

काव्यशास्त्र के नियमानुसार जिस कविता या काव्य में मात्रा, वर्ण, गण, यति, लय आदि का विचार करके शब्द योजना की जाती है उसे छन्द कहते हैं।

काव्य में छन्द के माध्यम से कम शब्दों में अधिकाधिक भावों की अभिव्यक्ति होती है तथा इससे संगीत और लय का समावेश हो जाता है। अतः गेयता, भावाभिव्यक्ति और नाद-सौन्दर्य की दृष्टि से छन्द की उपयोगिता सर्वमान्य है।

मात्रा लगाने के सामान्य नियम –

1. सभी ह्रस्व स्वरों और उनके योग से उच्चारित वर्णों पर लघु मात्रा लगती है।
2. दीर्घ स्वरों और उनके सहयोग से उच्चारित व्यंजनों पर गुरु मात्रा लगती है।
3. अनुस्वार और विसर्ग युक्त वर्णों पर गुरु मात्रा लगती है चाहे वे ह्रस्व वर्ण ही हों।
4. संयुक्त अक्षर से पूर्व के वर्ण पर गुरु मात्रा लगती है। यदि शब्द का पहला वर्ण संयुक्त है तो उस पर वर्ण के अनुसार मात्रा लगेगी अर्थात यदि वह लघु वर्ण है तो लघु और दीर्घ वर्ण है तो गुरु मात्रा लगेगी।
5. संयुक्ताक्षर के पूर्व के वर्ण पर यदि बल नहीं पड़ता तो उसकी मात्रा लघु ही रहेगी।

गण का स्वरूप- तीन वर्णों के समूह को गण कहते हैं। वर्णिक छंदों में वर्ण की गणना की जाती है। उन वर्णों की लघुता और गुरूता के विचार से गणों के आठ रूप होते हैं। उन गणों के नाम तथा लक्षण इस सूत्र से याद रखे जा सकते हैं।

'यमाताराजभान सलगा'			
गण	नाम	मात्राएँ	उदाहरण
यगण	यमाता	ISS	कहानी
मगण	मातारा	SSS	पांचाली
तगण	ताराज	SSI	वागीश
रगण	राजभा	SIS	साधना
जगण	जभान	ISI	हरीश
भगण	भानस	SII	गायक
नगण	नसल	III	सरस
सगण	सलगा	IIS	प्रभुता

यति – छन्द को पढ़ते समय जहाँ रुका जाता है उसे यति कहा जाता है।

लय – छन्द के पढ़ने की शैली को लय कहते हैं।

गति – गति का अर्थ है प्रवाह अर्थात छन्द को पढ़ते समय प्रवाह एक-सा हो। मात्रिक छंदों के लिए इसका विशेष महत्त्व है।

तुक – पद के चरणों के अन्त में जो समान स्वर आते हैं, तथा साम्य बैठाने के लिए लिये जाते हैं, उन्हें तुक कहते हैं।

छंद के भेद -

छंद दो प्रकार के होते हैं –

(अ) वर्णिक छंद

(ब) मात्रिक छंद

(अ) वर्णिक छंद - जिन छंदों में केवल वर्णों की गणना की जाती है तथा वर्णों की संख्या के आधार पर छंद का निर्धारण किया जाता है, उन्हें वर्णिक छंद कहते हैं।

(ब) मात्रिक छंद - जिन काव्य रचनाओं में मात्राओं की गणना की जाती है, उन्हें मात्रिक छंद कहते हैं।

दोहा, चौपाई, सवैया आदि मात्रिक छंद हैं।

दोहा छंद- इसके प्रथम एवं तृतीय चरणों में 13-13 और द्वितीय तथा चतुर्थ चरणों में 11-11 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण – 13 + 11 = 24

SS	॥	SS	।S	SS	SI।	SI	
मेरी	भव	बाधा	हरौ,	राधा	नागरि	सोय।	
जा	तन	की	झाँई	परे,	स्याम	हरित	दुति होय ॥
S	॥	S	SS	।S	SI	।।।	।। SI

13 + 11 = 24 = दोहा

चौपाई - चौपाई एक सम मात्रिक छंद है इसके प्रत्येक चरण में 16 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण– = 16

SII	।।।	।SII	SS	
मंगल	भवन	अमंगल	हारी।	
।।।	।	।।।।	।।।	।SS
द्रवउ	सु	दशरथ	अजर	बिहारी

करि प्रणाम रामहि त्रिपुरारी।
हरषि सुधा सम गिरा उचारी।।

पद्य साहित्य का इतिहास

साहित्य के दर्पण में समाज सदैव प्रतिबिम्बित होता है। प्रत्येक देश का साहित्य वहाँ की जनता की चित्तवृत्तियों का इतिहास कहा जा सकता है। जनता की मानसिक वृत्ति के परिवर्तन के साथ-साथ साहित्य के स्वरूप में भी बदलाव आता है। साहित्य के मूल में परिवर्तित सामूहिक चित्तवृत्तियों को आधार बनाकर साहित्य की परम्परा का व्यवस्थित अनुशीलन ही साहित्य का इतिहास कहलाता है।

हिन्दी साहित्य में लगभग एक हजार वर्ष का इतिहास केवल काव्य का इतिहास है। हिन्दी काव्य की इसी समृद्ध परम्परा में भारतीय समाज की बदलती परिस्थितियों और बदलती जन चेतना को स्पष्ट रूप से परिलक्षित किया जा सकता है। हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल पद्य एवं गद्य की विधाओं का विकास काल है। अत: आधुनिक काल साहित्य की समस्त विधाओं का इतिहास है।

रचनाओं की केन्द्रीय प्रकृति के आधार पर ही विभिन्न कालों का नामकरण किया गया है। यद्यपि प्रत्येक युग में विविध विषयों पर आधारित कविताएँ रची गई हैं।

हिन्दी साहित्य के इतिहास को चार भागों में विभाजित किया गया है :

1. **आदिकाल - (वीरगाथाकाल) - सन् 993 से 1318 तक (संवत् - 1050 से 1375 तक)**
2. **पूर्व मध्यकाल - (भक्तिकाल) - सन् 1318 से 1643 तक (संवत् - 1375 से 1700 तक)**
3. **उत्तर मध्यकाल - (रीतिकाल) - सन् 1643 से 1843 तक (संवत् - 1700 से 1900 तक)**
4. **आधुनिक काल - सन् 1843 से आज तक (संवत् - 1900 से आज तक)**

1. आदिकाल - (वीरगाथाकाल) :

राजनैतिक दृष्टि से यह युग उथल-पुथल से भरा युग था। देशी राजा अपने-अपने वर्चस्व की आपसी लड़ाई लड़ रहे थे। वे विदेशियों के आक्रमण का प्रतिकार करने में असमर्थ होते जा रहे थे, जबकि विदेशी आक्रमण निरन्तर हो रहे थे। समाज में वैषम्य की भावना परिलक्षित हो रही थी।

कवि राज्याश्रय प्राप्त कर राजदरबारों में रहकर कविता कर रहे थे। उन कविताओं का मुख्य विषय वीर भावनाओं पर केन्द्रित था। अधिकांश कवि अपनी काव्य रचना आश्रयदाता राजा का युद्ध में उत्साहवर्धन करने हेतु कर रहे थे।

यह काल हिन्दी का आरम्भिक काल था। इसलिए इसे आदिकाल नाम दिया गया। इस काल में वीरों की जीवन कथा पर आधारित गाथा प्रधान कविताएँ रची गईं। इन कविताओं के आधार पर इसे वीरगाथा काल कहा गया। इन कविताओं को रचने वाले चारण और भाट हुआ करते थे। ये आश्रयदाताओं की स्तुति और उनके यश का गायन अपनी कविताओं में करते थे, इसलिए इस काल को चारण काल भी कहा गया। इस युग में प्राकृत एवं अपभ्रंश में भी कविताएँ रची गईं। इसलिए इसे अपभ्रंश काल की भी संज्ञा दी गई।

इस युग की प्रमुख प्रवृत्तियाँ :

1. वीर रस की प्रधानता

2. युद्धों का सजीव चित्रण
3. आश्रयदाताओं की प्रशंसा एवं उनका यशगान
4. ऐतिहासिक घटनाओं का चित्रण
5. इतिहास के साथ कल्पना का संयोग, ऐतिहासिक तथ्य गौण।
6. शृंगार एवं अन्य रसों का भी समावेश।
7. प्राकृत, अपभ्रंश, डिंगल एवं पिंगल भाषा का प्रयोग

आदिकाल के प्रमुख कवि एवं उनके द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ इस प्रकार हैं:-

कवि	रचित ग्रंथ
चंदवरदायी	पृथ्वीराज रासो
नरपति नाल्ह	वीसलदेव रासो
जगनिक	परमाल रासो 'आल्हाखण्ड'
शारंगधर	हम्मीर रासो
दलपतिविजय	खुमान रासो
खुसरों की पहेलियाँ, विद्यापति की पदावली, कीर्तिलता और कीर्ति पताका	

सिद्ध साहित्य, नाथ साहित्य तथा जैन साहित्य भी इस युग की अमूल्य देन है। यह काल, तत्कालीन इतिहास सभ्यता और संस्कृति का परिचय कराता है। आदिकाल यह संदेश भी देता है कि युद्ध लोकहित के लिए तथा लोक रक्षा के लिए ही उचित है।

भक्ति काव्य :-

भक्तिकाल तक आते-आते राजाओं की शक्ति-क्षीण हो चुकी थी। भारत पर मुगल शासन स्थापित हो गया था। राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और धार्मिक सभी क्षेत्रों में संकट के बादल घिरने लगे। इस अवस्था से देश और समाज को उबारने के लिए संतों और कवियों को ईश्वर ही एकमात्र अवलम्बन दिखाई दिये। वीरता और शृंगार को छोड़कर कविता भक्ति, शरणागति और राष्ट्रीयता की ओर उन्मुख हो गई। कविता में जगत नियंता, जीवन और मानवता के स्वर गूँजने लगे, इसी कारण यह युग हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग कहलाता है।

इस काल में निम्नवत् काव्य धाराएँ प्रवाहित हो रहीं थीं-

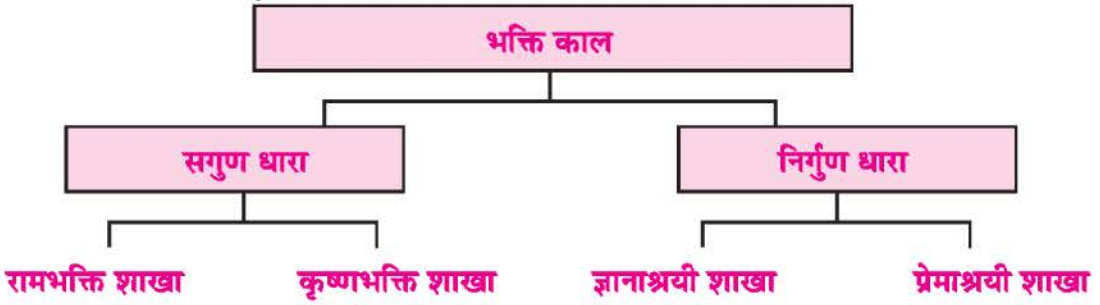

सगुण धारा - भक्तिकाल की इस काव्य धारा के कवियों ने ईश्वर के साकार रूप की लीलाओं का वर्णन किया है।

सगुणभक्ति धारा दो उपधाराओं में बँट जाती है।

रामभक्ति शाखा: जिन कवियों ने राम को आदर्श मानकर रचनाएँ की, वे रामभक्ति शाखा के कवि हैं। इस शाखा के प्रतिनिधि कवि गोस्वामी तुलसीदास जी हैं, जिन्होंने 'रामचरितमानस' प्रतिनिधि महाकाव्य की रचना की। इस शाखा के अन्य कवि नाभादास, अग्रदास, प्राणचन्द चौहान तथा हृदयराम हैं।

कृष्णभक्ति शाखा: जिन कवियों ने कृष्ण की लीलाओं और उनके जीवन पर आधारित रचनाएँ की वे कृष्णभक्ति शाखा के कवि कहलाए। महाकवि सूरदास इस शाखा के प्रतिनिधि कवि हैं। 'सूर सागर' उनका प्रतिनिधि ग्रंथ है। इस शाखा के अन्य कवि नन्ददास, कृष्णदास कुम्भनदास, छीत स्वामी, परमानन्द दास, गोविन्द स्वामी, चतुर्भजदास हैं। ये अष्टछाप के कवि कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त हित हरिवंश, मीरा तथा रसखान भी इसी शाखा के कवि हैं।

निर्गुण धारा – जिन कवियों ने ईश्वर को निराकार रूप में अपने काव्य में स्थान दिया, उन्हें निर्गुणधारा के कवि के रूप में जाना जाता है। यह धारा भी दो उपधाराओं में विभक्त हो जाती है।

ज्ञानाश्रयी शाखा– ज्ञान को ही ईश्वर तक जाने का मार्ग मानकर जिन्होंने काव्य साधना की, वे ज्ञानाश्रयी शाखा के कवि हैं। इस शाखा के प्रतिनिधि कवि 'कबीरदास' जी हैं। इनका प्रतिनिधि ग्रंथ 'बीजक' है। इस शाखा के अन्य कवि रैदास, गुरुनानक आदि हैं। इन्होंने आडम्बर, दिखावे तथा मूर्तिपूजा का विरोध किया एवं एकेश्वरवाद पर बल दिया।

प्रेमाश्रयी शाखा– जिन्होंने प्रेम के माध्यम से ईश्वर तक पहुँचने का मार्ग खोलना चाहा वे कवि प्रेमाश्रयी शाखा के अंतर्गत परिगणित होते हैं। इस शाखा के प्रतिनिधि कवि 'मलिक मोहम्मद जायसी' हैं। उनका प्रतिनिधि महाकाव्य 'पद्मावत' है। ये सूफी दर्शन से प्रभावित रहे। इस शाखा के अन्य कवि – मंझन, कुतुबन, शेखनबी, उसमान आदि हैं।

सगुणधारा के कवियों ने साकार आदर्शों के माध्यम से मानवीय संबंध, कर्त्तव्य–पालन, आदर्श, मर्यादा तथा शालीनता युक्त सत्कर्म में भटकाव से बाहर निकलने के लिए ज्ञान के प्रकाश को आवश्यक बताया है। उनका मत है कि– 'जहाँ प्रेम है वहीं ईश्वर का निवास है।'

भक्तिकाल की विशेषताएँ –

1. साकार एवं निराकार ब्रह्म की उपासना।
2. रहस्यवादी कविता का प्रारम्भ।
3. आध्यात्मिकता और सदाचार की प्रेरणा।
4. लोक कल्याण के पथ पर काव्य का चरमोत्कर्ष।
5. समस्त काव्य शैलियों का प्रयोग।
6. प्रकृति सापेक्ष्य वर्णन।

इस प्रकार ज्ञान और प्रेम का अद्भुत समन्वय जीवन की पूर्णता को स्पष्ट करता है।

भक्तिकाल का यही मूल संदेश है कि हम समय और परिस्थिति के अनुकूल ईश्वर के स्वरूप को स्वीकारें। प्राणि मात्र के मंगलविधान की कामना करें और अनैतिकता पर नैतिकता की विजय को ही जीवन का ध्येय मानें। इष्ट का स्वरूप प्रमुख नहीं होता बल्कि उसके संदेश मुख्य होते हैं। इन तथ्यों के प्रकाश में इस युग में जिस नीति काव्य की रचना हुई उसने सामाजिक सदाचरण का मार्ग प्रशस्त किया – नीति काव्य के रचयिता के रूप में रहीम, गिरधर तथा वृन्द का नाम इस काल में उल्लेखनीय है। उत्कृष्ट साहित्य लेखन, समाज सुधार, सामाजिक समरसता आदि के कारण ही भक्तिकाल को **स्वर्णयुग** नाम दिया गया।

भक्तिधारा

कवि परिचय :

रैदास

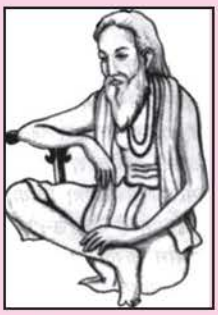

संत रैदास का जन्म अनुमानतः सन् 1388 में वाराणसी (उत्तर प्रदेश) में हुआ। मध्यकालीन संतों में रैदास का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका ज्ञान, साधना और अनुभव पर आधारित है। उन्होंने भक्ति के लिए वैराग्य को अनिवार्य माना है। उनका विचार है कि परम तत्व सत्य है जो अनिर्वचनीय और व्याख्या से परे है। यह परम तत्व जड़ और चेतन सभी में व्याप्त है।

संत रैदास अपने समय के प्रसिद्ध महात्मा थे। कबीर ने 'संतनि में रविदास संत' कहकर उनका महत्व स्वीकार किया है। इसके अतिरिक्त नाभादास, प्रियादास और मीराबाई ने भी रैदास का सम्मान पूर्वक स्मरण किया है। ऐसा माना जाता है कि सन् 1518 में रैदास परलोक गमन कर गए।

रैदास की रचनाएँ और पद ''गुरु ग्रंथ साहब'' में संकलित हैं। उनकी रचनाओं का एक पृथक संग्रह भी प्रकाशित हुआ है। रैदास के पदों में अरबी, फारसी, पंजाबी, गुजराती, ब्रज आदि विभिन्न भाषाओं के शब्द मिलते हैं। इन पदों में अलंकारों, रूपकों और दृष्टांतों के प्रयोग से ज्ञान और भक्ति का सहज उद्घाटन हुआ है। हिन्दी साहित्य में कवि रैदास का अति महत्वपूर्ण स्थान है।

परमात्मा के प्रति समर्पित भाव ही भक्ति का केन्द्रीय तत्व है। हिन्दी साहित्य के मध्यकाल के पूर्वार्द्ध में रचा गया, अधिकांश काव्य भक्ति केन्द्रित है। भक्ति के अन्तर्गत निरन्तर परमात्मा के सानिध्य का अनुभव भक्ति की भाव भूमि है। परमात्मा के साथ भक्त की दास भाव या सखा भाव रूप में संपृक्ति का भाव समग्र भक्ति के अन्तर्गत आने वाली भाव पद्धति है। ज्ञान और भक्ति ये दो मार्ग परमात्मा को प्राप्त करने के आधार हैं। ज्ञान का मार्ग कठिनाइयों से भरा है, जबकि भक्ति का मार्ग सबको सहज और सुलभ है। भक्ति के अन्तर्गत सभी मानव परमात्मा के साथ अपनी संलग्नता अनुभव कर सकते हैं। भक्ति युग में भक्ति सामाजिक परिवर्तन का आधार भी प्रस्तुत कर रही थी, इसलिए यह भी उस युग में उद्घोषित किया गया था कि – 'जाति-पाँति पूछे नहि कोई। हरि को भजे सौ हरि का होई।' भक्ति व्यक्ति के आंतरिक संस्कारों को परिमार्जित करने का आधार है, वहीं वह सामाजिक परिष्करण का भी मार्ग प्रशस्त करती है। भक्ति एक शाश्वत भावना है, इसलिए जब भी हम ईश्वर के समीप होते हैं और जब भी हम सामाजिक कल्याण की भावना से परिपूरित होते हैं तब एक भक्त की भूमिका में ही हम होते हैं। भक्त परमात्मा से अपना संबंध जब दास रूप में स्थापित कर लेता है, तब वह स्वयं अपने भीतर भगवान के विराट रूप से भर उठता है। इसी भाव की भक्ति कवि रैदास की है – 'तुम चन्दन हम पानी' तभी वे रात-दिन ईश्वर स्मरण में लीन रहना चाहते हैं। रैदास आचरण से मूलतः संत थे और साधना में लीन रहते थे। उन्होंने परमात्मा को कृष्ण, राम, गोविन्द नाम से स्मरण किया है। उनके भाव वैराग्य और साधना के साथ विनम्रता और आत्म सम्मान से युक्त हैं।

भक्ति और साधना की कसौटी पर मीराबाई पूर्ण रूपेण खरी उतरी हैं। वे कृष्णमय हो चुकी थीं। 'मेरे तो गिरधर गोपाल, दूसरो न कोई, जाके सिर मोर मुकुट मेरा पति सोई' कहकर मीराबाई ने सम्पूर्ण पारिवारिक और सामाजिक बंधनों से मुक्ति ले ली। मीरा ने अपने काव्य एवं आचरण से नारी मुक्ति का पथ प्रशस्त किया है – वे इस मायने में भक्तिकाल के परिदृश्य में स्त्री-जागरण का संदेश देने वाली कवयित्री हैं।

मीराबाई के भजन गेय हैं। इनका एक-एक शब्द उनकी आत्मीय अभिलाषा का अद्वितीय उदाहरण है। कभी वे अपने

आराध्य को पाकर संतुष्ट हो जाती हैं तो कभी उनके विरह में दुःखी होकर उनकी प्रतीक्षा करती दिखाई पड़ती हैं। मीराबाई की भक्ति में कहीं कोई टूटन नहीं है। वह तो सतत् प्रवाहिनी है। उनकी साधना और समर्पण देखकर सब नत-मस्तक हैं।

रैदास के पद

1.

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरे दिन राती ।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सोहागा ।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै 'रैदासा' ॥

2.

नरहरि ! चंचल है मति मेरी,
कैसे भगति करूँ मैं तेरी। ।
तूँ मोहि देखै, हौं तोहि देखूँ, प्रीति परस्पर होई ।
तूँ मोहि देखै, तोहि न देखूँ, यह मति सब बुधि खोई । ।
सब घट अंतर रमसि निरंतर मैं देखन नहिं जाना ।
गुनसब तोर, मोर सब औगुन, कृत उपकार न माना । ।
मैं, तैं, तोरि-मोरि असमझि सौं, कैसे करि निस्तारा ।
कह 'रैदासा' कृष्ण करुणामय ! जै जै जगत-अधारा । ।

3.

ऐसी लाल तुझ बिनु कउनु करै ।
गरीब निवाजु गुसईआ मेरा माथै शत्रु धरै ।
जा की छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ्रै ।
नीचह ऊँच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै । ।
नामदेव कबीरु त्रिलोचनु सधना सैनु तरै ।
कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते सभै सरै ।

कवि परिचय :

मीराबाई

मीराबाई का जन्म लगभग सन् 1498में राजस्थान के मेढ़ता गाँव में हुआ। मीरा का विवाह राणा सांगा के पुत्र भोजराज के साथ सम्पन्न हुआ। मीरा ने मोह माया त्याग कर श्रीकृष्ण की भक्ति का मार्ग अपना लिया। पारिवारिक प्रतिष्ठा पर आँच आती देख मीरा को अनेक तरह से रोका गया, कष्ट दिए गए परन्तु कृष्ण दीवानी मीरा भक्ति के पथ से विचलित न हुई। इनकी मृत्यु सन् 1546 में हुई। मीरा ने अनेक भक्ति पद रचे हैं। 'नरसी का माहेरो' 'गीत गोविन्द टीका', 'सोरठ के पद' इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं। इनकी भक्ति माधुर्य भाव की है। प्रेम की दीवानी मीरा के पदों में भावों की तन्मयता, प्रेम का आल्हाद और भक्ति की तल्लीनता उनके काव्य की अमूल्य धरोहर है। मीरा ने कृष्ण प्रेम में विरह ही नहीं अपितु सुखद संयोग भी प्राप्त किया है। साधु भाव की उपासिका मीरा के पद सांसारिकता से परे, वासना की दुर्गन्ध से मुक्त और आध्यात्मिक विरह की अनूठी व्यन्जना से परिपूर्ण है।

मीरा ने अपने काव्य में ब्रज भाषा के साथ गुजराती, अरबी, राजस्थानी और फारसी के शब्दों का भी बहुलता से प्रयोग किया है। प्रेम की भाव व्यंजना के लिए उन्हें जो भी उपयुक्त शब्द मिले उनका प्रयोग किया है, यही कारण है मीरा की भाषा में एकरूपता नहीं है।

मीरा के पदों में लय एवं संगीतात्मकता सहज रूप से है। गेय पद होने के कारण अलंकारों का सहज और स्वाभाविक प्रयोग मीरा के काव्य की विशेषता है। गीति काव्य की दृष्टि से हिन्दी साहित्य के कवियों/कवयित्रियों में मीरा का महत्वपूर्ण स्थान है।

पदावली

1.

पायो जी मैंने, रामरतन धन पायौ ।
वस्तु अमोलक दी मेरे सद्गुरू, किरपा करि अपनायौ ।
जनम-जनम की पूँजी पाई, जग में सभी खोवायो।
खरचै नहिं कोई चोर न लैवै, दिन-दिन बढ़त सवायौ ।
सत की नाव खेवटिया सतगुरू, भव सागर तर आयौ ।
मीरा के प्रभु गिरधर नागर, हरख-हरख जस गायौ ।

2.

सुनी हो मैं हरि आवनि की आवाज ।
महल चढ़े चढ़ि जोऊ सजनी, कब आवै महाराज । ।
दादर मोर पपइया बोलै, कोइल मधुरै साज ।
मग्यो इंद्र चहूँ दिस बरसे, दामणि छोड़े लाज ।
धरती रूप नवा नवा धरिया, इन्द्र मिलण कै काज ।
मीराँ के प्रभुहरि अविनासी, वेग मिलो महाराज । ।

3.

दरस बिन दूखण लागै नैन ।
अब के तु बिछरे, प्रभु मोरे, कबहु न पायौ चैन।
सबद गुणत मेरी छतिया, काँपै मीठे-मीठे बैन ।
कल न परत पल हरि मग जोवत, भई छमासी रैन ।
बिरह कथा काँसू कहूँ सजनी वह गयी करवत ऐन ।
मीराँ के प्रभु कबहे मिलोगे दुख मेटण सुख दैन । ।

अभ्यास

बोध प्रश्न-

(क) अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रैदास की प्रभु भक्ति किस भाव की है?
2. रैदास ने प्रभु से अपना संबंध किस रूप में निरूपित किया है?
3. मीरा बाई को कौन-सा रत्न प्राप्त हुआ था?
4. मीरा कहाँ चढ़कर प्रभु की बाट देख रही हैं?
5. मीरा के नेत्र क्यों दुखने लगे हैं?

(ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रैदास ने बुद्धि को चंचल क्यों कहा है?
2. 'जाकी छोति जगत कउ लागै ता पर तुहीं ढ्रै' से रैदास का क्या तात्पर्य है?
3. मीरा ने संसार रूपी सागर को पार करने के लिए क्या उपाय बताया है?
4. रैदास और मीरा की भक्ति की तुलना कीजिए।
5. 'प्रेम बेलि' के रूपक को स्पष्ट कीजिए।

(ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मीरा को राम रतन धन प्राप्त होने से क्या-क्या लाभ प्राप्त हुए हैं?
2. प्रभु दर्शन के बिना मीरा की कैसी दशा हो गई है?
3. ''रैदास के पदों में भक्तिभाव भरा हुआ है।'' स्पष्ट कीजिए।
4. भक्त और भगवान के संबंध में रैदास ने अलग-अलग क्या भाव व्यक्त किये हैं? स्पष्ट कीजिए।
5. **निम्नलिखित पंक्तियों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए-**

   अ - **बिरह कथा काँसू कहूँ सजनी, वह गयी करवत ऐन।**
   मीरा के प्रभु कबहे मिलोगे दुख मेटण सुख दैन । ।

   आ - **पायो जी मैंने, राम रतन धन पायौ ।**
   वस्तु अमोलक दी मेरे सतगुरु, किरपा करि अपनायो ।
   जनम-जनम की पूंजी पाई, जग में सभी खोवायो । ।

   इ - **प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी ।**
   प्रभुजी तुम घन वन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा ।

   ई - **नरहरि चंचल है मति मेरी, कैसे भगति करूँ मै तेरी ।**

काव्य सौन्दर्य -

1. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी मानक रूप लिखिए-
   औगुन, कअनु, गुसईआ, माथे, किरपा, हरख, जस, सुगत, कोइल।

2. निम्नलिखित के तीन-तीन पर्यायवाची शब्द लिखिए-

मोर, कोयल, इन्द्र, चन्द्र, ईश्वर, नैन

आइए सीखें-

1. जनम - जनम की पूँजी पाई जग में सभी खोवायो।
पँक्ति में 'ज' वर्ण की और 'प' वर्ण की आवृत्ति है।
2. कहि रविदासु सुनहु रे संतहु हरि जीउ ते समै सरै ।
पँक्ति में 'स' वर्ण की दो से अधिक बार आवृत्ति है।

उपर्युक्त उदहारण में वर्णों के बार-बार आने से काव्य पंक्तियों की शोभा बढ़ गई है। इससे प्रभाव और चमत्कार उत्पन्न हो रहा है।

''जिस रचना में किसी वर्ण की एक से अधिक बार आवृत्ति होने से चमत्कार उत्पन्न हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है'', जैसा कि उपर्युक्त उदाहरणों में हैं।

3. इस पाठ की उन पंक्तियों को छाँटकर लिखिए जिनमें अनुप्रास अलंकार है।
4. निम्नलिखित पंक्तियों में अलंकार पहचानकर लिखिए-

क- पायो जी मैंने रामरतन धन पायो।

ख- मैं तैं, तोरि-मोरि असमझि सौं, कैसे करि निस्तारा।

ग- सत की नाव खेवटिया सतगुरू भवसागर तर आयौ ॥

5. 'दरस बिन दूखण लागे नैन' पद में प्रयुक्त रस और स्थायी भाव का नाम लिखिए।
6. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए-

अ- तूँ मोहि देखै, हौं तोहि देखूँ, प्रीति परस्पर होई।

आ- प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती ।

इ- खरचै नहि कोई चोर न लेवै, दिन-दिन बढ़त सवायो ।

योग्यता विस्तार

1. मीरा का कोई पद, जो आपको बहुत अच्छा लगता हो, याद कीजिए और कक्षा में सुनाइए।
2. भक्ति काल के अन्य कवियों के भक्ति पदों को संकलित करिए और चार्ट पर बनाकर कक्षा में लगाइए।
3. पठित पदों के आधार पर भक्त कवि के रूप में मीराबाई एवं रैदास का चित्र बनाइए।

शब्दार्थ

बास - महक, सुगन्ध, निवाजु - करुणा, कृपा करने वाले, घन - बादल, गुसईया - मालिक, ईश्वर
जोति - प्रकाश, लौ, छोति - छूने मात्र से, बरै - जलती, सरे - पूरा होना, ढरे - तारने वाले, भगति - भक्ति
हौं - मैं घट - जीव, प्राण, हृदय रमति - रमते हैं, निस्तार - पारजाना, छुटकारा, मुक्ति
अमोलक - अमूल्य, आवनि - आने किरपा - कृपा, सजनी -सखी, खोवायो - खो दिया, दादुर - मेंढक
सवायो - सवागुना, पपइया - पपीहा, खेवटिया-खेने वाला, दामणि - बिजली, भव - संसार, नवा - नया
तर - पार करना, वेगि - शीघ्र, नागर - चतुर, विनि - बिना, हरख - प्रसन्न,
दूखन - दुखने, कल - चैन, जोवत - प्रतीक्षा करना, मेटण - मिटाने वाले